एदमणियोगद्दारं सेसछण्णमणियोगद्दाराणं जेण आसेयं तेण (* म प्रति पाठोऽयम्। ता प्रतौ 'असेयं (आसियं) तेण', अ प्रतौ 'आसियं तेण' इति पाठः।) तेसिमेत्थ परूवणा कायव्वा। तं जहा -- दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो -- ओघेण आदेसेण य। ओघेण बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, पदरस्स असंखे०भागो, असंखेज्जाओ सेडीओ, तासिं सेडीणं विक्खंभसूची पलिदो० असंखे०भागमेत्तघणंगुलाणि।

यतः यह अनुयोगद्वार शेष छह अनुयोगद्वारोंका आश्रय है, इसलिए उनकी यहाँपर प्ररूपणा करनी चाहिए। यथा -- प्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है -- ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं। चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं, अर्थात् प्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण या असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण हैं। उन जगश्रेणियोंकी विष्कम्भसूची पल्यके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुलप्रमाण है।

विशेषार्थ -- कार्मणकाययोगी जीवोंका प्रमाण अनन्त होनेसे यहाँ दो शरीरवाले जीव अनन्त कहे गये हैं। तीन शरीरवाले जीव अनन्त हैं यह तो स्पष्ट ही है। रह गये चार शरीरवाले जीव, सो पर्याप्त अग्निकायिक और वायुकायिक तथा पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें ही चार शरीवाले जीव सम्भव हैं, अतः इनका प्रमाण असंख्यात कहा है। यहाँ असंख्यातसे क्या लेना चाहिए इस बातका खुलासा क्षेत्रकी अपेक्षा किया है।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? पदरस्स असंखे०भागो। एवं सत्तसु पुढवीसु। णवरि बिदियादि जाव जाव सत्तम्मि त्ति सेडीए असंखे०भागो वत्तव्वो।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि दूसरीसे लेकर सातवीं पृथिवियोंमें जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहने चाहिए।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु ओघं। पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, पदरस्स असंखे० भागो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-बीइंदिय-तीइंदिय-चदुरिंदियाणं तेसिं पज्जत्त-अपज्जत्ताणं पंचिंदियअपज्जत्त-पुढवि०-आउ०बादरपुढवि०-सुहुमपुढवि०-बादरसुहुमआउ-पुढवि०आउ०बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणं बादरतेउ० बादरवाउ० अपज्जत्ताणं सुहुमतेउ० सुहुमवाउ० पज्जत्त-अपज्जताणं बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-अपज्जत्ताणं बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा। (तेउ० वाउ०) बादरतेउ०-बादरवाउ० तेसिं पज्जत्ताणं बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा।

तिर्यंचगतिकी अपेक्षा तिर्यंचोंमें ओघके समान भंग हैं। पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिनी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं, अर्थात् जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। पंचेन्द्रियतिर्यंचअपर्याप्त, मनुष्य अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, तीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, सूक्ष्म जलकायिक, पृथिवीकायिक बादर अपर्याप्त व पर्याप्त, पृथिवीकायिक सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त, जलकायिक बादर पर्याप्त व अपर्याप्त, जलकायिक सूक्ष्म पर्याप्त व अपर्याप्त, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक व उनके पर्याप्त व अपर्याप्त, सूक्ष्म वायुकायिक व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं।

मणुसगदीए मणुस्सेसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, सेडीए असंखे० भागो चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है? असंख्यात हैं, जो जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं।

देवगदीए देवेसु जाव सहस्सारे त्ति ताव णेरइयभंगो। आणद-पाणदप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु त्ति बिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा। तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया केवडिया? संखेज्जा।

देवगतिकी अपेक्षा सामान्य देवोंसे लेकर सहस्त्रार कल्पतकके देवोंमें नारकियोंके समान भंग हैं। आनत-प्राणत कल्पसे लेकर अपराजित विमानवासी देवोंतक दो शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात है, जो पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं।

विशेषार्थ -- यहाँ सहस्त्रार कल्पतकके देवोंका भंग नारकियोंके समान कहा गया है, सो यह सामान्य कथन है। विशेष रूपसे सौधर्म ऐशान कल्पतकके देव जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं और सानत्कुमारसे लेकर सहस्त्रार कल्पतकके देव जगश्रेणिके असंख्यातवें भागप्रमाण जानने चाहिए। शेष कथन स्पष्ट ही है।

इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरेइंदियपज्जत्ता बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा, पलिदो० असंखे० भागो। बादरेइंदियअपज्जत्त-सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्ता बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा तेसिं पज्जत्तापज्जत्ता बिसरीरा तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। पंचिंदिया पंचिंदियपज्जत्ता तस-तसपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खभंगो।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं, जो पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। बादर एकेन्द्रिय

अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इनके पर्याप्त और अपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं। वनस्पतिकायिक और निगोद जीव तथा बादर और सूक्ष्म तथा इनके पर्याप्त और अपर्याप्त दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं। पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त, त्रस और त्रसपर्याप्त जीवोंका भंग पंचेन्द्रिय जीवोंके समान है।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सकाय-जोगिविभंगणाणीसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा। णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सा चदुसरीरा णत्थि। कायजोगि-णवुंसयवेद-कोध-माण-माया-लोहकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचक्खुदंसणि-किण्ण-णील-काउल्लेसिय-भवसिद्धिय-अभवसिद्धिय-मिच्छाइट्ठि त्ति ओघं। ओरालियकायजोगीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा। ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा। कम्मइयकायजोगीसु बिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? अणंता। तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी, पाँचों वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिक मिश्रकाययोगी और विभंगज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। इतनी विशेषता है कि वैक्रियिक काययोगी और वैक्रियिकमिश्र काययोगी जीव चार शरीरवाले नहीं होते। काययोगी, नपुंसकवेदवाले, क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य, अभव्य और मिथ्यादृष्टि जीवोंका भंग ओघके समान है। औदारिक काययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनंत हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। औदारिकमिश्र काययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनंत हैं। आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी चार शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनंत हैं। तीन शरीरवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं।

विशेषार्थ -- यहाँ काययोगी आदि जितनी मार्गणाओंमें ओघके समान भंग कहा है सो ये सब मार्गणाएँ अनंत संख्यावाली हैं। अतः इनमें ओघके समान दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंकी संख्या बन जानेसे इनमें ओघके समान जाननेकी सूचना की है। शेष कथन सुगम है।

वेदाणुवादेण इत्थि-पुरिसवेद-आभिणि-सुद-ओहिणाणि-चक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-तेउ-पम्मलेस्सिय-सम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सण्णीणं तसकाइयभंगो।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेद और पुरुषवेदवाले तथा आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि, वेदकसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवोंका भंग त्रसकायिक जीवोंके समान है।

विशेषार्थ -- इन मार्गणाओंमें एक तो त्रसकायिक जीवोंके समान दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव होते हैं, दूसरे इनकी संख्या असंख्यात है, इसलिए इनकी प्ररूपणा त्रसकायिक जीवोंके समान जाननेकी सूचना की है।

अवगदवेद-अकसाइ-केवलणाणि-परिहार० सुहुमसांपराइय०-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजद-केवलदंसणीसु तिसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा। मणपज्जवणाणिसंजद-सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा। संजदासंजद-सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरा चदुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? असंखेज्जा। सुक्कलेस्सिय-खइयसम्माइट्ठि-उवसमसम्माइट्ठीसु बि ुसरीरा दव्वपमाणेण केवडिया? संखेज्जा। तिसरीरा चदुसरीरा दव्वप० के०? असंखेज्जा। असण्णीसु बिसरीरा तिसरीरा दव्वप० के०? अणंता। चदुसरीरा दव्वप० के०? असंखेज्जा।

अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, परिहारविशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायसंयत, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत और केवलज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। मनःपर्ययज्ञानी, संयत, सामायिकशुद्धिसंयत और छदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं। संयतासंयत और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। शुक्ललेश्यावाले, क्षायिकसम्यग्दृष्टी और उपशमसम्यग्दृष्टी और उपशमसम्यग्दृष्टी जीवोंमें दो शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं।

असंज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं।

विशेषार्थ -- शुक्ललेश्यावाले, क्षायिकसम्यग्दृष्टि और उपशमसम्यग्दृष्टि जीव विग्रहगतिमें संख्यात ही होते हैं, इसलिए इनमें दो शरीरवालोंका प्रमाण संख्यात कहा है। तथा चार शरीरवाले ओघसे ही असंख्यात बतलाये हैं, इसलिए असंज्ञियोंमें चार शरीरवालोंका प्रमाण असंख्यात कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

आहाराणुवादेण आहारएसु तिसरीरा दव्वप० के०? अणंता। चदुसरीरा दव्वप० के०? असंखेज्जा। (* अ प्रतौ 'संखेज्जा' इति पाठः।)

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? अनन्त हैं। चार शरीरवाले द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं। अनाहारकोंमें कार्मणकाययोगी जीवोंके समान भंग है।

।। एवं दव्वपरूवणा समत्ता।।

।। इस प्रकार द्रव्यप्ररूपणा समाप्त हुई।।

खेत्ताणुगमेण दुविहो णिद्देसो -- ओघेण आदेसेण य। ओघेण बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते (* अ प्रतौ 'तिसरीरा दव्व० प० के० खेत्ते' इति पाठः)? लोगस्स असंखे० भागे।

क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है -- ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। एवं सत्तसु पढवीसु णेयव्वं। तिरिक्खगदीए तिरिक्खकायजोगि-णवुंसयवेद-कोह-माण-माया-लोहकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि असंजद-अचक्खुदंसणि-किण्ण-णील-काउलेस्सिय-भवसिद्धिय-अभवसिद्धिय-मिच्छाइट्ठि-असण्णीसु ओघं। पंचिंदियतिरिक्खतिग-इत्थि-पुरिसवेद-आभिणि-सुद-ओहिणाणि-चक्खुदंसणि-ओहिदंसणि-तेउ-पम्मलेस्सिय-वेदग-उवसमसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सण्णीसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-सव्वदेव-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-तप्पज्जत्तापज्जत्त

(* अ का प्रत्योः 'चउरिंदियतसपज्जत्त' इति पाठः।) पंचिंदियतसअपज्जत्ताणं णेरइयभंगो। मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणि-पंचिंदियतसअपज्जत्ताणं णेरइयभंगो। मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणि-पंचिंदियपज्जत्त-तस-तसपज्जत्त-सुक्कलेस्सिय-सम्माइट्ठि-खइयसम्माइट्ठीसु बिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इस प्रकार सातों पृथिवियोंमें जानना चाहिए। तिर्यंचगतिकी अपेक्षा तिर्यंचोंमें तथा काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयत, अचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भंग हैं। पंचेन्द्रियतिर्यंचत्रिक, स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी, पीतलेश्यावाले, पद्मलेश्यावाले, वेदकसम्यग्दृष्टि, उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संज्ञी जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। पंचेन्द्रियतिर्यंच अपर्याप्त, मनुष्यअपर्याप्त, सब देव, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त व अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय पर्याप्त और त्रस अपर्याप्त जीवोंमें नारकियोंके समान भंग हैं। मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त, मनुष्यिनी तथा पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपर्याप्त, त्रस, त्रसपर्याप्त, शुक्ललेश्यावाले, सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्र है।

इंदियाणुवादेण एइंदिय-बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तएसु ओघं। बादरेइंदियअपज्जत्त० सुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्त-पुढवि०-आउ०-बादरपुढवि०-बादरआउ०-तदपज्जत्त-सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्त-तेउ०-बादरतेउ०-अपज्जत्त०-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्त-वणप्फदिकाइय-णिगोदजीव-बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्त-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तएसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते? सव्वलोगे।

बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। बादरतेउ० पज्जत्तएसु बिसरीरा तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। बादरवाउकाइयपज्जत्ता चदुसरीरा केवडि० खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। बिसरीरा तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स संखे भागे (* प्रतिषु 'लोगस्स असंखे भागे' इति पाठः।)

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें ओघके समान भंग हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकेन्द्रिय व पर्याप्त और अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त, बादर जलकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, अग्निकायिक, बादर अग्निकायिक, बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, वायुकायिक, बादर वायुकायिक, बादर वायुकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म अग्निकायिक, सूक्ष्म वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त, वनस्पतिकायिक, निगोदजीव तथा इनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले, तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें चार शरीरवालोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है।

विशेषार्थ -- बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र लोकके संख्यातवें भागप्रमाण होनेसे इनमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंका क्षेत्र बन जाता है। शेष कथन सुगम है।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचि०-वेउव्वियकायजोगि-वेउव्वियमिस्स-कायजोगि-विभंगणाणि-मणपज्जवणाणि-सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजम-संजमा-संजमसम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरा चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। णवरि वेउव्विय-वेउव्वियमिस्सा

चदुसरीरा णत्थि। ओरालिय०जोगीसु आहाराणुवादस्स आहारीसु च तिसरीरा केवडि खेत्ते? सव्वलोए। चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे। ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरा केवडि खेत्ते? सव्वलोगे। आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे। अणाहार (* ता प्रतौ 'आ(अणा)हार--', अ का प्रत्योः 'आहार' इति पाठः।) कम्मइय० जोगीसु बिसरीरा केवडि खेत्ते? सव्वलोगे। तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखेज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा। णवरि कम्मइय० लोगस्स असंखेज्जदिभागो णत्थि।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी, पाँचों वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिक मिश्र काययोगी तथा विभंगज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी, सामायिकशुद्धिसंयत, छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत, संयतासंयत और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। इतनी विशेषता है कि वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले नहीं हैं। औदारिककाययोगी और आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। औदारिक मिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। आहारककाययोगी और आहारक मिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। अनाहारकों और कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? सर्व लोकप्रमाण क्षेत्र है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके संख्यात बहुभागप्रमाण और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्र है। इतनी विशेषता है कि कार्मणकाययोगी जीवोंसे लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र नहीं है।

विशेषार्थ -- अनाहारक अवस्था अयोगिकेवलियोंके भी होती है। वहाँ तीन शरीरोंका सद्भाव बन जाता है, इसलिए तीन शरीरवालोंकी अपेक्षा अनाहारकोंका क्षेत्र लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण भी कहा है। परन्तु यह क्षेत्र कार्मणकाययोगी जीवोंमें घटित न होनेसे उनमें इसका निषेध किया है।

अवगदवेद-अकसाइ-केवलणाणि-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजद-केवल-दंसणीसु तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे असंखेज्जेसु वा भागेसु सव्वलोगे वा। एवं संजदाणं। णवरि चदुसरीरा लोग० असंखे० भागे। परिहार०सुहुमसांपरायसुद्धिसंजदेसु तिसरीरा केवडि खेत्ते? लोगस्स असंखे० भागे।

अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्र है। इसी प्रकार संयतोंके जानना चाहिए। इतनी विशेषता है कि इनमें चार शरीरवालोंका लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है। परिहारशुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवाले जीवोंका कितना क्षेत्र है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्र है।

।। एवं खेत्ताणुगमो त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।।

।। इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।।

फोसणाणुगमेण दुविहो णिद्देसो -- ओघेण आदेसेण य। ओघेण बिसरीर-तिसरीरएहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो। चदुसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो अदीदेण सव्वलोगो।

स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है -- ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीर और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकका स्पर्शन किया है। चार शरीरवाले जीवोंने कितने शरीरका स्पर्शन किया है? वर्तमानकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीतकालकी अपेक्षा सर्व लोकका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ -- औदारिकशरीरसे विक्रिया करते समय मारणान्तिक समुद्घात सम्भव है, इसलिए चार शरीरवालोंका अतीत स्पर्शन सर्व लोकप्रमाण कहा है। आगे भी यह स्पर्शन इसी प्रकार घटित कर लेना चाहिए। शेष कथन स्पष्ट ही है।

आदेसेण णिरयगईए णेरइएसु बिसरीर-तिसरीरएहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखेज्जदिभागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा । पढमाए पुढवीए खेत्तभंगो।

बिदियादि जाव समत्तपुढवि त्ति बिसरीरा-तिसरीरएहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखेज्जदिभागो, अदीदेण एक्क-बे-तिण्णि-चत्तारि-पंच-छचोद्दसभागा देसूणा।

आदेशसे नरकगतिमें नारकियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानमें लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पहली पृथ्वीमें क्षेत्रके समान भंग है। दूसरीसे लेकर सातवींतककी पृथिवियोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्श किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा क्रमसे त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम एक भाग, कुछ कम दो भाग, कुछ कम तीन भाग, कुछ कम चार भाग, कुछ कम पाँच भाग और कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु सामण्णतिरिक्ख-कायजोगि-णवुंसयवेद-कोह-माण-माया-लोभकसाइ-मदि-सुदअण्णाणि-असंजद-अचक्खुदंसणि-किण्ण-णील-काउलेस्सिय-भवसिद्धि-अभवसिद्धि-मिच्छाइट्ठि-असण्णीसु ओघभंगो। पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्त-मणुसअपज्जत्त-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपज्जत्तापज्जत्ता-पंचिंदियअपज्जत्त-तसअपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरएहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो।

तिर्यंचगतिकी अपेक्षा तिर्यंचोंमें सामान्य तिर्यंच तथा काययोगी, नपुंसकवेदी, क्रोधकषायवाले, मानकषायवाले, मायाकषायवाले, लोभकषायवाले, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी, असंयतअचक्षुदर्शनी, कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले, कापोतलेश्यावाले, भव्य, अभव्य, मिथ्यादृष्टि और असंज्ञी जीवोंमें ओघके समान भंग हैं। पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंचपर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिनी जीवोंमें दो शरीर, तीन शरीर और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्श किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पंचेन्द्रियतिर्यंच अपर्याप्त, मनुष्य, अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय तथा इन तीनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त पंचेन्द्रिय पर्याप्त और त्रस अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने

क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यात भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्श किया है।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणी बिसरीर-चदुसरीरएहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? लोगस्स असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्श किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ -- मनुष्यगतिमें मारणान्तिक समुद्घात और उपपादपदकी अपेक्षा सब लोकप्रमाण स्पर्शन सम्भव है, इसलिए यहाँ तीन प्रकारके मनुष्योंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंका अतीतकालीन स्पर्शन सर्वलोकप्रमाण कहा है। मात्र उपपादपदके समय चार शरीरवाले नहीं होते इतना विशेष जानना चाहिए। शेष कथन स्पष्ट ही है।

देवगदीए देवेसु केवडियं खेत्तं फोसियं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसियं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा। भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसियदेवेसु बिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसियं? लोगस्स असंखे० भागो। तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसियं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो, अदीदेण अद्धुट्ठ अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा। सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु बिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसियं? वट्टमाणेण लोग० असंखंखे० भागो, अदीदेण दिवड्ढ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसियं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा देसूणा। सणक्कुमारप्पहुडि जाव सहस्सारकप्पवासियदेवेसु बिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसियं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण तिण्णि अद्धुट्ठ चत्तारि (* अ प्रतौ 'तिण्णि चत्तारि' इति पाठः।) अद्धपंचम चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसियं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। आणद-पाणद-आरण-अच्चुदकप्पवासियदेवेसु बिसरीर-तिसरीरेहिं केवडियं

खेत्तं फोसियं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। णवगेवेज्जविमाणवासियदेवप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु बिसरीर-तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसियं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो।

देवगतिकी अपेक्षा देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षआ त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम डेढ़ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भाग और कुछ कम नौ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सनत्कुमारसे लेकर सहस्त्रार कल्पतकके देवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे क्रमसे कुछ कम तीन भाग, कुछ कम साढ़े तीन भाग, कुछ कम चार भाग, कुछ कम साढ़े चार भाग और कुछ कम पाँच भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम आठ भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्पवासी देवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवालोंने शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है?

वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके चौदह भागोंमेंसे कुछ कम छह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। नौ ग्रैवेयक विमानवासी देवोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंतक इनमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ -- सब देवोंमें जिसका जो उपपाद पदकी अपेक्षा स्पर्शन बतलाया है वह यहाँ दो शरीरवालोंका स्पर्शन जानना चाहिए और शेष तीन शरीरवालोंका जानना चाहिए। यहाँ आनत-प्राणत कल्पोंमें दो शरीरवालोंका भी स्पर्शन त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण कहा है। सो यह सामान्य कथन प्रतीत होता है, क्योंकि, कुछ कम साढ़े पाँच भाग राजुका अन्तर्भाव कुछ कम छह बटे चौदह भागमें हो जाता है। वास्तवमें इनमें उपपादपदकी अपेक्षा स्पर्शन कुछ कम साढ़े पाँच भागप्रमाण बतलाया है। अतः यहाँ दो शरीरवालोंका स्पर्शन भी इतना ही प्राप्त होगा। आगे भी सब स्पर्शन इन विशेषताओंको ध्यानमें रखकर घटित कर लेना चाहिए।

इदियाणुवादेण एइंदिय-बादरेइंदिय-बादरेइंदियपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। चदुसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बादरेइंदियअपज्जत्तसुहुमेइंदियपज्जत्तापज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? अदीदवट्टमाणे सव्वलोगो। पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहिं केव० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो असंखेज्जा भागा (* ता प्रतौ 'असंखेज्जा भागा' इति पाठो नास्ति।) सव्वलोगो वा (* म प्रति पाठोऽयम्। अ का प्रत्योः 'चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फो० वट्टमाणेण लोग० संखे० भागो। असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा' इति पाठः।), अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा सव्वलोगो वा।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत

कालकी अपेक्षा सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त तथा सूक्ष्म एकेन्द्रिय और उनके पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत काल और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्वलोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

कायाणुवादेण पुढवि०-आउ०-बादरपुढवि०-बादरआउ० (* अ प्रतौ 'आउ० बादरआउ०' इति पाठः।)-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरअपज्जत्त-सुहुमपुढवि०-सुहुमआउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो। बादरपुढवि०-बादरआउ०-बादरवणप्फदिपत्तेयसरीर-पज्जत्तएसु बिसरीरतिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तेउ०-वाउ-बादरतेउ०-बादरवाउकाइएसु बिसरीर-तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बादरतेउक्कायपज्जत्तएसु बिसरीर-तिसरीर-चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बादरवाउ० पज्जत्तएसु चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। बिसरीर-तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० संखे० भागो (* प्रतिषु 'लोग० असंखे० भागो' इति पाठः।), अदीदेण सव्वलोगो। बादरतेउक्काइय-बादरवाउक्काइयअपज्जत्त-सुहुमतेउ०-सुहुमवाउ०-तप्पज्जत्तापज्जत्ताणं बिसरीर-तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० सव्वलोगो। एवं वणप्फदि-णिगोदजीवाणं तेसिं चेव बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्ताणं च वत्तव्वं। तस-तसपज्जत्ताणं पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ताणं भंगो।

कायमार्गणाके अनुवादसे पृथिवीकायिक और जलकायिक तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर जलकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा इन तीनोंके अपर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म जलकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीर और

तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर जलकायिक पर्याप्त और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अग्निकायिक, वायुकायिक, बादर अग्निकायिक और बादर वायुकायिक जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर अग्निकायिक पर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवालों, तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंमें चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। दो शरीरवालों और तीन शरीरवालोंनें कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। बादर अग्निकायिक अपर्याप्त, बादर वायुकायिक अपर्याप्त तथा सूक्ष्म अग्निकायिक और सूक्ष्म वायुकायिक तथा इन दोनोंके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंमें दो शरीरवाले और तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमानकालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। इसी प्रकार वनस्पतिकायिक और निगोद तथा उनके बादर और सूक्ष्म तथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके कहना चाहिए। त्रस और त्रसपर्याप्त जीवोंका भंग पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके समान है।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगीसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओरालियकायजोगीसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो। चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं?

वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओरालियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो। वेउव्वियकायजोगीसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ तेरह चौद्दसभागा वा देसूणा। वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो। आहार-आहारमिस्सकायजोगीसु चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिद? अदीद-वट्टमाणेण लोगस्स असंखे० भागो। कम्मइयकायजोगीसु बिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण सव्वलोगो। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागा, सव्वलोगो वा (* प्रतिषु 'असंखे भागो सव्वलोगो वा' इति पाठः।)।

योगमार्गणाके अनुवादसे पाँचों मनोयोगी और वचनयोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। औदारिककाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। औदारिक मिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वैक्रियिक काययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम तेरह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। कार्मणकाययोगी जीवोंमें दो शरीरवालोंने

कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदेसु बिसरीर-चउसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा। अवगद-अकसाइ-केवलणाणि-जहाक्खादविहार०-केवलदंसणीसु तिसरीरेहिं के खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अपगतवेदी, अकषायी, केवलज्ञानी, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत और केवलदर्शनी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

णाणाणुवादेण विभंगणाणीसु तिसरीरेहिं केवडियं खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ तेरह चोद्दसभागा वा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुहि सरीरेहि के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। आभिणि-सुद-ओहिणाणीसु चदुसरीर-बिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। मणपज्जवणाणीसु तिसरीर-चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे विभंगज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ आठ बटे चौदह भाग, कुछ कम तेरह बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण

क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंनें कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। आभिनिबोधिक ज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें चार शरीरवाले और दो शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। मनःपर्ययज्ञानी जीवोंमें तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

संजमाणुवादेण संजदेसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा। चउसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो। सामाइय-च्छेदोवट्ठावणसुद्धसंजदाणं मणपज्जवभंगो। परिहार-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो। संजदासंजदाणं तिसरीर-चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंमें तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सामायिकशुद्धिसंयत और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीवोंमें मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके समान भंग है। परिहारशुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमानकालकी अपेक्षआ लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। संयतासंयतोंमें तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें

भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु बिसरीरा लद्धिं पडुच्च अत्थि णिव्वत्तिं पडुच्च णत्थि। जदि अत्थि तो तेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा सव्वलोगो वा। चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण सव्वलोगो। ओहिदंसणीणमोहिणाणिभंगो।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनवाले जीवोंमें दो शरीरवाले लब्धिकी अपेक्षासे हैं, निर्वृत्तिकी अपेक्षासे नहीं हैं। यदि हैं तो उन्होंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवाले जीवोंमें कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। अवधिदर्शनवाले जीवोंका भंग अवधिज्ञानवाले जीवोंके समान है।

लेस्साणुवादेण तेउलेस्सिएसु बिसरीर-चउसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण दिवड्ढ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं०? वट्टमाणे० लोग० असंखेज्जभागो, अदीदेण अट्ठ णव चोद्दसभागा देसूणा। पम्मलेस्सिएसु चदुसरीरेहिं के० खेत्तं० फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण पंच चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे लोग० असंखे० भागो०, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। सुक्कलेस्सिएसु बिसरीर-चउसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। केवलिभंगो वा।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे पीतलेश्यावाले जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और

अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम डेढ़ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। पद्मलेश्यावालोंमें चार शरीरवाले और दो शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम पाँच बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। शुक्ललेश्यावालोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सब लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। और केवलज्ञानीका जो स्पर्शन बतला आये वह भी अतीत कालकी अपेक्षा यहाँ स्पर्शन जानना चाहिए।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु बिसरीर-चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण छ चोद्दसभागा देसूणा। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा केवलिभंगो वा। खइयसम्माइट्ठीसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे लोग० असंखे० भागो असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा केवलिभंगो वा। बिसरीर-चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणेण लोग० असंखे० भागो। वेदगसम्माइट्ठीणमोहिणाणिभंगो। उवसमसम्माइट्ठीसु बिसरीर-चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं। अदीद वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो। तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। सासणसम्माइट्ठीसु बिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण बारह चोद्दसभागा वा देसूणा। चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणेण लोग०

असंखे० भागो, अदीदेण सत्त चोद्दसभागा देसूणा। सम्मामिच्छाइट्ठीसु तिसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? वट्टमाणे० लोग० असंखे० भागो, अदीदेण अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा। चदुसरीरेहिं के० खेत्तं फोसिदं? अदीद-वट्टमाणे० लोगस्स असंखे० भागो।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवाले और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमानकालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है और केवलज्ञानियोंके जो स्पर्शन बतलाया है वह स्पर्शन भी अतीत कालकी अपेक्षा यहाँ जानना चाहिए। क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण और सर्व लोकप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तथा अतीत कालकी अपेक्षा त्रसनालीके कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है और केवलज्ञानियोंके समान भंग है। दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। वेदकसम्यग्दृष्टी जीवोंका भंग अवधिज्ञानी जीवोंके समान है। उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालों और चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान और अतीत कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवाले जीवोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोंमें दो शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम बारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा

लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तीन शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण और अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है। चार शरीरवालोंने कितने क्षेत्रका स्पर्शन किया है? अतीत और वर्तमान कालकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन किया है।

विशेषार्थ -- सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें चार शरीरवालोंका नीचे कुछ कम पाँच राजु स्पर्शन नहीं उपलब्ध होता, क्योंकि, एक तो सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच और मनुष्य नारकियोंमें तथा मेरुके नीचे एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्घात नहीं करते। दूसरे नारकी तिर्यंचों और मनुष्योंमें मारणान्तिक समुद्घात करते हुए भी चार शरीरवाले नहीं होते। इसलिए सासादनोंमें चार शरीरवालोंका स्पर्शन कुछ कम सात बटे चौदह राजुप्रमाण कहा है। शेष कथन स्पष्ट ही है।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं चक्खुदंसणियभंगो। आहाराणुवादेण आहारीणं ओरालियकायजोगिभंगो। अणाहारीणं बिसरीराणं कम्मइयभंगो। तिसरीराणं केवलिभंगो। एवं फोसणाणुगमो समत्तो।।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंका भंग चक्षुदर्शनवाले जीवोंके समान है। आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंका भंग औदारिककाययोगी जीवोंके समान है। अनाहारकोंमें दो शरीरवालोंका भंग कार्मणकाययोगी जीवोंके समान है। तीन शरीरवालोंका भंग केवलज्ञानियोंके समान है।

।। इस प्रकार स्पर्शनानुगम समाप्त हुआ।।

कालाणुगमेण दुविहो णिद्देसो -- ओघेण आदेसेण य। ओघेण बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया। तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ।

चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं।

कालानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है -- ओघ और आदेश। ओघसे दो शरीरवालोंका काल कितना है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीके बराबर है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

विशेषार्थ -- कार्मणकाययोगका नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल होनेसे यहाँ नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका सर्वदा काल कहा है। इसी प्रकार तीन शरीरवाले और चार शरीरवाले जीव भी निरन्तर पाये जाते हैं, इसलिए नाना जीवकी अपेक्षा इनका सर्वदा काल कहा है। तथा एक जीवकी अपेक्षा कार्मणकाययोगका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल तीन समय होनेसे दो शरीरवालोंका एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल तीन समय कहा है। जो औदारिक शरीरके साथ विक्रिया कर रहा है वह एक समयके लिए तीन शरीरवाला होकर यदि द्वितीय समयमें मर कर दो शरीरवाला हो जाता है तो उसके तीन शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय प्राप्त होता है। यह देखकर एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय कहा है। तथा आहारक अवस्थाका उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका उत्कृष्ट काल उक्त प्रमाण कहा है। किसी जीवने औदारिक शरीरसे विक्रिया प्रारंभ की और दूसरे समयमें मर कर वह दो शरीरवाला हो गया। यह देखकर एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय कहा है। तथा एक जीवके विक्रियाका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है, इसलिए एक जीवकी अपेक्षा चार शरीरवालोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त कहा है। आगे गति आदि मार्गणाओंमें इसी प्रकार कालका विचार कर वह घटित कर लेना चाहिए।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे भागो। एगजीवं पडुच्च जह०

एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० दसवाससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि। पढमपुढविप्पहुडि जाव सत्तमपुढविणेरइएसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० दसवाससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० सागरोवमं संपुण्णं। जह० सागरोवमं समऊणं, उक्क० तिण्णि सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जह० तिण्णि सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० सत्त सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जह० सत्त सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० दस सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जह० (* अ प्रतौ 'उक्क० दससागरोवमाणि समऊणाणि। जह०' इति पाठः।) दससागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० सत्तारस सागरोवमाणि संपुण्णाणि। जह० सत्तारस सागरोवमाणि समऊणाणि, उक्क० बावीसं सागरो० संपुण्णाणि। जह० बावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि।

आदेशसे गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिकी अपेक्षा नारकियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्षप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तैंतीस सागर है। पहली पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नारकियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीमें जघन्य काल दो समय कम दस हजार वर्ष है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण एक सागर है। दूसरी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम एक सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तीन सागर है। तीसरी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम तीन सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण सात सागर है। चौथी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम सात सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण दस सागर है। पाँचवीं पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम दस

सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण सत्रह सागर है। छठी पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम सत्रह सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण बाईस सागर है। सातवीं पृथिवीमें जघन्य काल एक समय कम बाईस सागर है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण तैंतीस सागर है।

विशेषार्थ -- नरकमें नाना जीव विग्रह गतिसे यदि निरन्तर उत्पन्न हो तो कमसे कम एक समय तक और अधिकसे अधिक आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल तक ही उत्पन्न होते हैं। सामान्यसे और प्रत्येक पृथिवीमें यही नियम है, इसलिए यहाँ सर्वत्र नाना जीवोंकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण कहा है। तथा एक जीव यहाँ सर्वत्र यदि विग्रहसे उत्पन्न हो तो कमसे कम एक विग्रह और अधिकसे अधिक दो विग्रह उत्पन्न होता है, इसलिए यहाँ एक जीवकी अपेक्षा दो शरीरवालोंका जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल दो समय कहा है। विग्रहके इन दो समयोंकी अपनी जघन्य स्थितिमेंसे कम कर देनेपर एक जीवकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका जघन्य काल होता है और उत्कृष्ट काल अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिप्रमाण है यह स्पष्टही है। तथा नरकगति निरन्तर मार्गणा है, इसलिए नाना जीवोंकी अपेक्षा तीन शरीरवालोंका काल सर्वदा है यह भी स्पष्ट है।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि समया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडु० सव्वद्धा। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० अगुलस्स असंखे० भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा

केवचिरं का० होंति। णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं संपुण्णं।

तिर्यंचगतिकी अपेक्षा तिर्यंचोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल तीन समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी कालप्रमाण है। चार शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है। पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिनियोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्यप्रमाण है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। पंचेन्द्रियतिर्यंच अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

विशेषार्थ -- पहले ओघसे कालका स्पष्टीकरण कर आये हैं। सामान्य तिर्यंचोंमें उसी प्रकार स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। पंचेन्द्रियतिर्यंच आदिमें भी उसी प्रकार अपनी अपनी विशेषता जानकर कालका स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। तात्पर्य यह है कि जिस मार्गणामें एक जीव और नाना जीवोंकी अपेक्षा अनाहारकोंका जघन्य और उत्कृष्ट जो काल हो वह वहाँ दो शरीरवाला काल जानना चाहिए। तीन शरीरवालों और चार शरीरवालोंका काल लाते समय कई

बातोंका ध्यान रखनेकी आवश्यकता है। यथा -- मार्गणाका द्रव्यप्रमाण कितना है और मार्गणा सान्तर है या निरन्तर आदि। ओघसे कालका स्पष्टीकरण करते समय कुछ विशेषताओंका निर्देश किया ही है उन्हें ध्यानमें रखकर यहाँ और आगे कालका स्पष्टीकरण लेना चाहिए।

मणुसगदीए मणुस्सेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं काला० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। चदुसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं। मणुसअपज्जत्तेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलियाए असंखेज्जदिभागो। एगजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० खुद्दाभवग्गहणं बिसमऊणं, उक्क० अंतोमुहुत्तं संपुण्णं।

देवगदीए देवेसु बिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि। भवणवासियप्पहुडि जाव सहस्सारकप्पवासियदेवेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० आवलि० असंखे० भागो। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरं केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० सागरोवमं सादिरेयं। जह० दसवस्ससहस्साणि बिसमऊणाणि, उक्क० पलिदोवमं सादिरेयं। जह० पलिदोवमस्स अट्ठमभागो बिसमऊणो, उक्क० पलिदोवमं सादिरेयं। जह० पलिदोवमं सादिरेयं, उक्क० बेसागरोवमाणि

सादिरेयाणि। जह० बेसागरो० सादिरेयाणि, उक्क० सत्त सागरो० सादिरेयाणि। जह० सत्त साग० सादिरेयाणि, उक्क० दस सागरो० सादिरेयाणि। जह० दस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० चोद्दस सागरोव० सादिरेयाणि। जह० चोद्दस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० सोलस सागरो० सादिरेयाणि। जह० सोलस सागरो० सादिरेयाणि, उक्क० अट्ठारस सागरो० सादिरेयाणि। आणद-पाणदप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवेसु बिसरीरा केवचिरं कालादो होंति? णाणाजीवं पडुच्च जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया। एगजीवं प० जह० एगसमओ, उक्क० बेसमया। तिसरीरा केवचिरं का० होंति? णाणाजीवं प० सव्वद्धा। एगजीवं प० जह० अट्ठारस सागरोवमाणि सादिरेयाणि, उक्क० वीसं सागरोवमाणि। जह० वीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० बावीसं सागरोवमाणि। जह० बावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तेवीसं सागरोवमाणि। जह बावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तेवीसं सागरोवमाणि। जह० तेवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० चदुवीसं सागरोवमाणि। जह० चउबीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० पणवीसं सागरोवमाणि। जह० पणुवीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० छब्बीसं सागरोवमाणि। जह० छब्बीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० सत्तावीसं सागरोवमाणि। जह० सत्तावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० अट्ठावीसं सागरोवमाणि। जह० अट्ठावीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० एगुणतीसं सागरोवमाणि। जह० एगुणतीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तीसं सागरोवमाणि। जह० तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० एक्कतीसं सागरोवमाणि। जह० एक्कतीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० बत्तीसं सागरोवमाणि। जह० बत्तीसं सागरो० समऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि। सव्वट्ठे जह० तेत्तीसं सागरो बिसमऊणाणि, उक्क० तेत्तीसं सागरोवमाणि संपुण्णाणि।

मनुष्यगतिकी अपेक्षा मनुष्योंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नानाजीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्य है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें दो शरीरवालोंका

कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल संख्यात समय है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्व अधिक तीन पल्य है। चार शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा सर्वदा काल है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है। मनुष्य अपर्याप्तकोंमें दो शरीरवालोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल एक समय है और उत्कृष्ट काल दो समय है। तीन शरीरवाले जीवोंका कितना काल है? नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण है। एक जीवकी अपेक्षा जघन्य काल दो समय कम क्षुल्लक भवग्रहणप्रमाण है और उत्कृष्ट काल सम्पूर्ण अन्तर्मुहूर्तप्रमाण है।

विशेषार्थ -- मनुष्य अपर्याप्त यह सान्तर मार्गणा है। इसमें निरन्तर यदि जीव पाये जाते हैं तो कमसे कम क्षुल्लक भवग्रहणकालतक और अधिकसे अधिक पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण कालतक रहते हैं। उसके बाद नियमसे अन्तर पड़ जाता है। इसी विशेषताको ध्यानमें रखकर यहाँ तीन शरीरवालोंका काल कहा है। शेष कालका स्पष्टीकरण पूर्वमें कही गयी विशेषताओंको ध्यानमें रखकर लेना चाहिए।